ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

प्रसारण का वैज्ञानिक आधार और उसकी चुनातियाँ एक विश्लेषण

डॉ बाला लखेंद्र
सहायक प्रोफेसर
पत्रकारिता और जनसंप्रेषण विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

जनसंचार के विविध माध्यम आज जिस प्रकार सूचना विस्फोट से चमत्कृत करके और शिक्षण–प्रशिक्षण, सम्प्रेषण, संवाद, मनोरंजन तथा सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन में प्रेरक की व्यापक भूमिका निभा रहे ळे उसी प्रकार ये साहित्य, कला और संस्कृति के पोषण एवं विन्यास में भी अपनी विशिष्ट सराहनीय भूमिका अपने ढंग से निभाते रहे हैं। संचार माध्यम के स्वरूप और उसकी विधायें अवश्य भिन्न थीं लेकिन लोक रूचि, ग्रहणशीलता तथा हितों के अनुरूप ही उन्हें सम्प्रेषणीय बनाये रखने के प्रयत्न पारखियों द्वारा किये जाते रहे हैं ।

इस सदी के आरंभ में ही अचानक परिवहन की रफ्तार घेड़े की चाल से छलांग लगाकर जेट वायुयान की तरह आसमान लांघकर चांद सितारों को छूने लगी । सम्प्रेषण और संचार के साधनों ने भी विद्युत गति से विद्युत तरंगों पर तैरकर कल्पनातीत क्षितिज छू लिये । मानव ने वैज्ञानिक खोजों के जरिये जैसे प्रकृति पर विजय पाकर विधाता को चुनौती देने की ठान ली।पौराणिक प्रसंगों एवं जादुई परियों वाली कहानी की दुनियां जैसे हकीकत में बदलने लगीं । रेडियो टेलीविजन ने कौतूहल और चमत्कार की नई दुनियां ही जैसे खोलकर रख दी।सारी दुनियां सिमट कर घर–आंगन में आ गई। सूचना, समाचार, संगीत, नृत्य, नाटक, रूपक और सिनेमा प्रदर्शन से लेकर विज्ञापन विश्लेषण की चमचमाती दुनियां यह आज हमारे सामने परोस रहे हैं।रेडियो टेलीविजन के कार्यक्रम, जिन्होंने लिपि, भाषा, क्षेत्रीयता और प्रान्तीयता की दीवारें जैसे ढहा दी हैं और क्रमशः हमें सेटेलाइट चैनलों के जरिये वैश्विक दृष्टि अपनाते हुए हमें अपनी रूचियों एवं पसंद में वैविध्य और व्यापकता लाने का अवसर प्रदान किया है। इसमें खतरे भी हैं और वे साधारण नहीं हैं। गांव के आम आदमी की समस्यायें, विपन्नता, बेरोजगारी, अशिक्षा, कुपोषण, गैर बराबरी, आर्थिक शोषण, सामाजिक सरोकार, सांस्कृतिक पहचान को हाशिये पर धकेल कर उसकी भारी अवहेलना करते हुए संचार माध्यम उसकी घोर उपेक्षा करते हैं।फलतः विकास की प्रक्रिया में भी सुविधा भेागी शहरी अपनी चतुराई, ऊंची आवाज ओर प्रभावी सांठगांठ से अधिकांश लाभ का हिस्सा हड़प कर लेता है और गॉव–गॉव में बसी लगभग अस्सी प्रतिशत भारतीय जनता बदहाली व पिछड़ेपन की शिकार है। यहां तक कि उनकी भाषा बोली, मुहावरे और सरोकारों के साथ–साथ उनकी अभिरूचिओं का भी कोई पुर साहाल नहीं रह गया।

हमारे देश की आबादी एक सौ करोड़ यानि एक अरब पार कर रही है। ऐसी स्थिति में चाहे जितना भी प्रयास आर्थिक सम्पन्नता ले आने के लिए किया जाय वह अधूरा होगा। सामुदायिक विकास हमारे लक्ष्य के अनुरूप पूरा नहीं होगा। फलतः गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, कुपोषण, असंतोष और आक्रोश कम होने की बजाए बढ़ेगा। समाधान खोजने में मनुष्य धैर्य विवेक खेाकर असामाजिक तत्वों के हाथों खिलौना बनकर क्षेत्रीयता, जातीयता, साम्प्रदायिकता, बिखराव अैर अराजकता की तरफ बहक

Copyright © 2020 Authors

 ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

सकता है जो देश के लिए शुभ नहीं है।संचार माध्यम शब्द बेधीवाण है, एक नाजुक व्यापार है संप्रेषण। हर स्थिति में संवाद जारी रहना चाहिए किन्तु शांति, विराम, शून्य चुप्पी का भी अपना कम महत्व नहीं है बशर्ते समय स्थानपात्र देखकर उसका सही इस्तेमाल हो।बार–बार इस्तेमाल से भी शब्द अपना अर्थबोध/प्रभाव खोदेते हैं अतः सावधानी अपेक्षित है। बढ़ती आबादी की बाढ़ को उसकी पूरी मानवीय संवेदना तथा व्यापक प्रभाव के अनुमान के साथ कल्पनाशील कार्यक्रमों के जरिये रोकने के लिए जनमानस को दृढ़ प्रतिज्ञ बनाना होगा किन्तु यदि परिवार कल्याण विभाग तथा स्वास्थ्य विभाग स्वयं उतनी तत्परता से आगे नहीं बढ़ता तो क्या संचार माध्यम विकास कार्य कर्ताओं का पर्याय बन सकता है? शायद नहीं, हमारा काम प्रेरित करना है वातावरण बनाना है, डाक्टरों नर्सों की जगह लेना नहीं है।

उसी प्रकार देश के नागरिकों में राष्ट्रीय चरित्र का अभाव जैसा दिखता है। आज आत्मविश्वास बढ़ाने वाले मनोबल ऊँचा रखने वाले और–राष्ट्रीय भावना से प्रेरित कार्यक्रम निरंतर होने चाहिए। गौरवशाली इतिहास पौराणिक प्रसंग, प्रेरक घटनाएं और नीति बोधक कथायें प्रस्तुत की जानी चाहिए निज देश, निज भाषा और निज संस्कृति की पहचान के प्रति गौरव बोध पैदा किया जाना चाहिए।श्रम की महिमा बढ़ाने वाले युवा को उद्बोधित करने वाले कार्यक्रम बनाये जाने चाहिए।साहित्य–सुरूचिपूर्ण ढंग से यदि प्रस्तुत किया जाय तो मनोरंजन पाने के साथ–साथ श्रोता उससे उद्बोधन, रूचि, परिमार्जन और मानवीय संवेदन से भी आत्मसात होता है।अतः सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

सेटेलाइट की टेकनीक ने हमें संचार साधनों में विदेशी परामुखता से बचाकर स्वावलम्बी वैज्ञानिक प्रगति की दिशा में अधिकाधिक प्रयोग का अवसर दिया है।अतः अब शिक्षा के क्षेत्र में जो लक्ष्य संविधान में निर्धारित करके भी हम समय साध्य ढंग से पूरा नहीं कर सके है उसे अब पूरा कर लेने की ठाननी होगी। स्कूल ऑन एयर विद्यालय से विश्वविद्यालय तक की शिक्षा व्यवस्था समानान्तर ढंग से उपलब्ध करानी होगी। अनौपचारिक ढंग से ऐसे समय जब श्रोता दर्श समय निकाल सके अपने परिवार के व्यवसाय की परिस्थिति के अनुरूप। अक्षर लिपि की सीमाओं से मुक्त मौखिक वाचिक ज्ञान बॉटकर हमें व्यवहारिक जीवन से जुड़ी जानकारी लोगों तक उनकी भाषा बोली में पहुँचानी होगी।

देश में विकास और सुधार की योजनाएं बनी किन्तु आज भी स्वच्छ सबको सुलभ नहीं है।गॉवों में खेती अलाभ कर हो तीजा रही है। सिंचाई का व्यापक प्रबन्ध नहीं हैं। पंचायतों तक भ्रष्टाचार जा पहुॅचा है।कच्ची–कच्ची सड़कों के जरिये राजनीति जा घुसी है चौपालों में। अतः पर्व त्योहारों पर ढोल झाल पर सामुहिक रामायण गान, होली, फाग, चैती, कजरी, बिरहा की जगह गोलबन्दी, अदावतें और चुनावी दॉव पेंच प्रेरित पर निन्दापु राण बॉचा जाता है। कुश्ती, अखाड़े, पुस्तकालयों की बजाय नौजवान अबजुआ, शराब, तम्बाकू, गॉजा भॉग नशीली दवाओं और मारपीट में अपनी जिन्दगी गारत करते हैं। अतः इस क्षेत्र में विशेष कुछ करने की जरूरत हैं। पहले सुन्दर–काव्य रचनाओं की अन्त्याक्षरी होती थी अब फिल्मी अन्त्याक्षरी हो रही है। क्या हम फिर से कुछ मनोरंजक कार्यक्म्र स्वस्थ मनोहारी ढंग से नहीं प्रस्तुत कर सकते हैं?

बढ़ती जागरूकता के साथ स्थानीय समस्याओं और अपेक्षाओं के प्रति आग्रह भी आनेवाली सदी में बढ़ेगा ही। अतः स्थानीय प्रसारण केन्द्रों की आवश्यकता बढ़ती जायगी। देश के हर जिले में और फिर हर कस्बे और विकास खण्ड स्तर तक भी जाकर ऐसे प्रसारण केन्द्र चलाने होंगे जो स्थानीय लोगों की आवश्यकता, अपेक्षा, सरोकारों और रूचियों के अनुरूप सूचना प्रद, मनोरंजक और शिक्षण हेतु कार्यक्रम प्रसारित करें। स्थानीय प्रतिभाओं को पहचान कर उन्हें अवसर देकर प्रोत्साहित किया जाये और समस्याओं के समाधान का व्यवहारिक ढंग से विचार विनिमय के जरिये ढूँढ़ निकालने में स्थानीय जन नेताओं की मदद् की जाय। स्थानीय भाषा बोली, संस्कृति रूप और साहित्य कलाओं को भी अपनाते हुए राष्ट्रीय एकता के सुनहरे सूत्र को कभी न बिसरने किया जाय। खेतीबारी, पशुपालन, लघु उद्योग, पंचायत, जन स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, सामाजिक न्याय और लोक शिक्षण को प्रमुख समय दिया जाये।

 Copyright ⓒ 2020 Authors

इसी प्रकार बड़ी विज्ञापन सेवाओं के साथ–साथ जन साधारण के बधाई संदेशों, बीमारियां, शोक सूचना के लिये दुर्घटना एवं स्वास्थ्य संबंधी, रक्त किडनी दान संबंधी सूचना के लिए व्यवस्था की कमी है, उचित मूल्य लेकर ही सही। उसी प्रकार वैवाहिक विज्ञापन हेतु भी नौकरी संबंधी सूचना के साथ–साथ समय निर्धारित किया जाना होगा। जन उपयोगी सूचनाये जैसे भूकम्प, वर्षा, बाढ़, बिजली, पानी बन्दी, सड़क दुर्घटना या मरम्मत के कारण व्यवधान, रेल संबंधी सूचना, हड़तालों, उत्सव आयोजनों आदि की सूचना सशुल्क प्रसारित की जानी चाहिए।

वैज्ञानिक अनुसंधानों की चमत्कारिक प्रगति से कई अनजाने क्षितिज वितान के दायरे दरकेंगे और प्रकृति के व्यापार से छेड़छाड़ भी कई आशंकाओं को आमंत्रण देगी, ऐसा तो लगता है। जाहि रहै, उसके प्रभाव को भी झेलना होगा अगली सदी की मानवता को।

अभी भी दुनियॉ के अधिकांश देशों में भीषण गरीबी, गैर बराबरी, कुपोषण और अशिक्षा के कारण पिछड़ापन मुँह बाये खड़ा है। आसान नहीं है अगली शताब्दी में भी इनका समाधान पूरी तरह ढूढ़ पाना। मानवता युद्धों और प्राकृतिक विपदाओं के कारण कराह रही है। क्रमशः पूर्ण निरस्त्रीकरण का दबाव सभी छोटे–छोटे राष्ट्रों पर बराबर लागू हो तभी शांति दुनियॉ में आयेगी। मानवीय संवेदनाओं का तेजी से क्षरण हो रहा है। ''परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम्'' जैसे आर्षवचन पाप पुण्य की कसौटी नहीं रहे बल्कि पापपुण्य की अवधारणा ही बदल चुकी है मनुष्य अपनी मनमानी के लिए आकर्षण तर्क ढूँढ़ लेता है। समाज की परवाह किसी को नहीं रह गई। सभी अपने अपनों के लिए जी रहे हैं। ऐसी स्वार्थ परक सोच बदले बिना देश समाज संसार के प्रति मानवीय दायित्व बोध का क्या होगा।संचार माध्यम भी अपने धड़ल्ले से इस्तेमाल के कारण अपनी नाजुकता का अहसास खोकर स्वयं शोख, कर्णभेदी शोर और ऑखों को चका चौंध करनेवाली तेज रोशनी जैसा प्रभाव शून्य और संवेदनहीन बन गया है जिसे मानवीय संवेदनाओं एवं मानवीय जरूरतों से जोड़कर विकसित करना होगा।

ऐसा नहीं है कि आनेवाली सदी में दुनिया का भूगोल ही बदलने जारहा हैं यद्यपि बढ़ती आबादी के लिये भोजन जुटाना कठिन होता जायगा और जीवन की गुणवत्ता भी बद से बदतर ही होती जाएगी जहॉ उसके सुधार की जरूरत है। किंतु कुछ धनी देश यथापूर्ण अपनी समृद्धि के कारण मोटापा, कैंसर, हृदय रोग, ब्लडशुगर और विलासिता के कारण यौन रोगों मुख्यतः एड्स के शिकार बड़ी संख्या में हो रहे हैं। कटते जंगल और बढ़ते प्रदूषण के कारण भी प्राकृतिक प्रकोप भी बढ़ रहा है।जलवायु परिवर्तन से लेकर बर्फीले पहाड़ों के पिघलने, बाढ़ के कारण, नदी और समुद्र तट के लोगों की तबाही झेलनी पड़ रही है। सुनामी की त्रासदी की पुनरावृत्ति से बच पाना साधन सम्पन्न देश इसे संभाल पाने में सक्षम भी हो सकते हैं। अनुमान है कि पीने के पानी की भी किल्लत हो सकती है। बढ़ते वाहनों की तेज रफ्तार तथा कोलाहल से दिल की धड़कने ही नहीं बढ़ सकती कान के पर्दे भी फट सकते हैं या वे अपनी अधिक समय तक कारगर बने रहने की क्षमता खो सकते हैं। जाहिर है, संचार माध्यमों को परिस्थिति के अनुरूप मानवोपयोगी कार्यक्रम तैयार करने होंगे और उस भाषा शैली शिल्प से जो श्रोता दर्शकों को आकर्षित प्रभावित कर सके अन्यथा तब तक वर्तमान कार्यक्रम उनके लिए उबाऊ व्यर्थ, प्रभावहीन, हास्यास्पद और संदर्भहीन लगने लगेंगे। अतः बदलते समय की बदलती परिस्थितियों के अनुरूप श्रोता दर्शक के स्वरूप को पहचान कर उसकी ग्रहणशीलता के अनुरूप संदेश तथा कार्यक्रम तैयार करने के लिए संचार माध्यमों को प्रयोगधर्मी, परिवर्तनशील और नये शिल्प विधान के साथ संतुलन बनाये रखने वाले बनाते जाना होगा। उदाहरण के लिए यूरोप में टेलीविजन के छा जाने के बाद भी रेडियो की उपयोगिता समाप्त नहीं हुयी बल्कि उसका इस्तेमाल बदलते प्रयोजनों के लिए बखूबी किया रहा है जैसे सड़क परिवहन मार्गदर्शन सेवा आदि। भारत में भी दूरदर्शन आने के बाद रेडियो की उपयोगिता कम नहीं हुयी क्योंकि गॉव–गॉव तक, दुर्गम स्थलों, टापुओं तक। आनेवाले वर्षो में मानसिक तनाव बढ़ेगे। अतः व्यायाम, खेल, योगासन, स्वास्थ्य सेवा, चिकित्सा सलाह सेवा और संगीत के ऐसे एफ एम रेडियो चैनल चलाने पड़ेंगें जो लगातार श्रोता–दर्शकों को मनचाहा कार्यक्रम उनकी आवश्यकता के अनुसार दे सके।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

बढ़ती मन की कुण्ठाओं के कारण मनोचिकित्सा सलाह सेवा तथा युवा प्रतिभाओं को आजीविका मार्गदर्शन हेतु व्यावसायिक परामर्श सेवा हेतु भी प्रसारण आयोजित किये जा सकते हैं। हमें प्रसारण के वस्तु विषयों, विधाओं, समय अवधि अवधारण, बदलते श्रोता परिवेश के अनुरूप उसकी भाषा शैली में परिवर्तन तो करने ही होंगे, वार्ताकारों की सूची में भी परिवर्तन करना होगा। भेंटवार्ता, रेडियो रूपक, रेडियो विचारगोष्ठी, परिसंवाद और संगोष्ठी को सार्थक संवाद का स्वरूप दे सकें ऐसे लेखकों को शिल्पगत परिपक्वता के कारण आमंत्रित किया जाना चाहिए। भाई–भतीजावाद, परस्पर सुविधा विनिमय अथवा बाहरी दबाव के कारण नहीं। आनेवाले समय में रेडियो काव्य पाठ, कथा पाठ को शिल्पगत श्रेष्ठता तक ले जाना होगा जिसकी अनन्त संभावनायें हैं।

नये वैज्ञानिक संसाधनों और अधुनातन अनुसंधानो के परिणामस्वरूप जो नई टेकनालाजी आ रही उसका लाभ उठाते हुए हमें प्रसारणों को 'पार्टिसिपेटिव' यानि भागीदारीयुक्त बनाना होगा। एकालाप की जगह साक्षात्कार की संम्भावनायें बढ़ानी होगी जिसमें श्रोता दर्शक कार्यक्रम सुनते हुए स्पष्टीकरण मॉग सके, प्रश्न पूछ सके अथवा स्थानीय रूप से उपलब्ध नई जानकारी जोड़ सके। उच्चरित शब्द के कार्यक्रम वास्तव में घटनाओं सच्चाई पर आधारित हों, छद्म या काल्पनिक पात्रों द्वारा बनावटी न हों। अन्यथा विश्वनीयता संदिग्ध हो जायगी। कम्प्यूटर की उपयोगिताओं से प्रसारण को और भी पुष्ट और प्रभावी करना होगा।

बढ़ती–प्रतिद्वन्द्विता के युग में संचार माध्यमों को अपनी साख, पहचान असंदिग्ध बनाये रखने के लिए निर्भीक सत्य के प्रति आग्रही और अप्रयोग धर्मी बने रहना होगा तभी आनेवाली सदी की चुनौतियों का सामना वह स्वविवेक से करते हुए सत्यं शिवं सुन्दरम्, बहुजन–हिताय, बहुजन सुखाय के आदर्श को लोक मंगल की भावना से चरितार्थ कर सकेगा।

- सन्दर्भ --

- कुमार के. जे. ,मासकम्युनिकेशन इन इंडिया, मुम्बई : जैको पब्लिकेशन हॉउस , 2008 (प्रिंट)
- मैक्विल ,डेनिस, मासकम्युनिकेशन थ्योरी , नई दिल्ली: विस्तारा पब्लिकेशनपी, 2007(प्रिंट)
- मेलकोट, श्रीनिवास, आर एंड एच. लेस्लीस्टीव्स, कम्युनिकेशन फॉर डेवलपमेंट इन दी थर्ड वर्ल्ड : थ्योरी एंड प्रैक्टिसेज फॉर एम्पावरमेंट, नई दिल्ली: SAGE P, 2001।(प्रिंट)
- आकाशवाणी वार्षिक प्रतिवेदन 2004 , 2004 , 2005

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

Copyright © 2020 Authors